समय नहीं है।

विषय वस्तु का संगठन

विषयवस्तु एक अनुक्रम में होना चाहिए। ऐसा न होने से पाठ्यक्रम बोझिल हो जाता है। छात्र विषय वस्तु में रुचि नहीं लेते हैं।

विषयवस्तु संगठन में यह ध्यान देना चाहिए कि उसमें निरंतरता बनी हुई है कि नहीं। यदि इसमें निरंतरता का अभाव है तो यह अधिक लाभदायक नहीं है।

विषयवस्तु संगठन का एक आधार उसका औचित्य तथा लचीलापन भी है। ताकि समय-समय पर इसमें फेरबदल किया जा सके।

विषयवस्तु संगठन के समय उसके मूल्यांकन को भी ध्यान में रखना चाहिए। इसका निर्माणात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation) तथा समग्र मूल्यांकन (Summative Evaluation) दोनों समय हो।

इसप्रकार पाठ्यचर्या सिद्धांत का अर्थ है शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रियाओं तैयार करना, उसको कार्यान्वित करना तथा उपयुक्त मूल्यांकन करना। इसका एक क्रमबद्ध स्वरूप जो सामान्य होने के साथ-साथ व्यवहारिक भी है, इस प्रकार है— इस स्वरूप के प्रथम स्थान पर पूर्व-निर्धारित शैक्षिक लक्ष्य को रखा गया है। द्वितीय स्थान पर अनुभवों का चयन किया गया है। तृतीय स्थान पर विषयवस्तु के चयन को रखा गया है। चतुर्थ स्थान पर अनुभवों एवं विषय-वस्तु का संगठन तथा एकीकरण है। पाँचवा स्थान मूल्यांकन के लिए है।

Scanned with CamScanner